कालीबंगा – हड़प्पा सभ्यता की एक विवेचना।

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निदेशक

शोधार्थी

विनोद कुमार

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय जयपुर

2023

अनुक्रमणिका

1. शोध परिचय
2. शोध अध्ययन की आवश्यकता
3. शिक्षा की परिभाषाएं
4. शोध समस्या
5. तकनीकी शब्दावली
6. शोध विधि
7. शोध के चर
8. शोध के उद्देश्य
9. परिकल्पना
10. अध्ययन में अपनाये जाने वाली विधि
11. शोध का परिसीमन

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कालीबंगाः सिन्धु घाटी सभ्यता से परे एक हड़प्पा महानगर, अभियान XVII(2) - थापर बीके 1972।

2- कालीबंगा मानव कंकाल अवशेष : एक अस्थि – पुरातान्विक दृष्टिकोण, जर्नल ऑफ द ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट XIX : 109-113 |

शोध परिचयः–

कालीबंगा हड्प्पा सभ्यता के मुख्य स्थानों में से एक महत्वपूर्ण स्थल है। कालीबंगा एक छोटा कस्बा था। यहां प्राचीन द्रषवती और सरस्वती नदी घाटी वर्तमान में घग्घर नदी (नाली, मृत, नटनदी) के क्षेत्र में सिन्धु सभ्यता से भी प्राचीन सभ्यता अंकुरित व फलीभूत हुई।

इसका कालखण्ड 4000 BC से भी अधिक प्राचीन है जो कि हड्प्पा सभ्यता के रेडियो कार्बन C-14 (2300-1750BC) से भी पूर्व के है।

इस महत्वपूर्ण स्थल को शोध करने से प्राचीन भारतीय मानव की उत्पत्ति व सांस्कृतिक विशिष्टताओं को अच्छी प्रकार से समझा जा सकेगा।

इस शोध के दुरगामी परिणाम निकलने से प्राचीन मानव जाति के रहन, सहन, खान–पान रीति रिवाज व अन्य परम्पराएँ निकलकर सामने आयेगी व वर्तमान के परिपेक्ष्य में रखकर दोनों का सामंजस्य बैठाकर आधुनिक सभ्यता की नींव रखने में यह शोध कारगर साबित होगा।

कालीबंगा

पुरातात्विक संग्रहालय कालीबंगा, जिला हनुमानगढ़ की तहसील पीलीबंगा मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस संग्रहालय की स्थापना पूर्व में सन् 1985 में की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के सभी पूर्व महानिदेशकों प्रोफेसर बी. बी. लाल, श्री बी. के. थापर तथा श्री जे. पी. जोशी, के निर्देशन में **नौ सत्रों (सन् 1961–69)** में हुए उत्खननों के दौरान कालीबंगा पुरास्थल से प्राप्त पुरातात्विक पुरावशेषों को प्रदर्शित करना था। इस पुरास्थल के उत्खनन से **प्रारम्भिक हड़प्पाकालीन संस्कृति (3000–2700 ई.पू.) तथा विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति (2600–1900 ई.पू.)** के पुरावशेष प्राप्त हुये हैं। इन उत्खननों के दौरान कालीबंगा पुरास्थल से प्राप्त दोनों सांस्कृतियों के पुरातात्विक पुरावशेषो को संग्रहालय की तीन वीथीकाओं में प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय को 3 वर्ष के पुनः जिर्णोद्धार के पश्चात् **18 मई 2017** को **विश्व संग्रहालय दिवस** के अवसर पर पुनः खोला गया।

प्रथम वीथीका:– इस वीथीका में प्रदर्शित पुरावशेषों में चर्ट ब्लेड, स्टोन डीवाईस, कॉपर रिंग, कॉपर बाण, शेल(शंख), अगेट, कार्नेलियन, फियान्स तथा लेपिस लेजुलि के मनके, पक्की मिट्टी से निर्मित केक तथा खटियां, पक्की मिट्टी की पशुओं की आकृतियां जैसे बैल, कुत्ता, सुअर, मेंढा, चिटीखोर, ऊंट, गेंडा, हाथी तथा पक्की मिट्टी से निर्मित पक्षीयों की आकृतियां जैसे चिड़ियां, बांज, तोता, कबुतर का सिर तथा छोटी बतख इत्यादी को प्रदर्शित किया गया है। अन्य पक्की मिट्टी के पुरावशेषों में आहार कप, शिवलिंग की आकृति, हल, चकला तथा बेलन, शतरंज या चौसा खेलने के पासे, खिलौना, ईंटें तथा झुनझुना इत्यादी को भी प्रदर्शित किया गया है। इस वीथीका में पहले पांच शोकेस प्रारम्भिक हड़प्पाकालीन संस्कृति से तथा बाकी विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति से सम्बन्धित हैं।

दूसरी वीथीका:– इस वीथीका में उत्खननों से प्राप्त सामन्यतः घरों में प्रयोग होने वाले मृदभाण्डों तथा शवाधान अन्त्येष्टि संस्कार प्रक्रिया में प्रयोग होने वाले बर्तनों को प्रदर्शित किया गया हैं। जिनमें से कुछ पर चित्रण हैं, कुछ बिना चित्रण के है और कुछ पर लेखन उत्कीर्ण हैं। चित्रित मृदभाण्डों के टुकड़ों पर फुल–पत्तिया, मछलियां तथा ज्योमितीय अलंकरण है तथा लेखन उत्कीर्ण मृदभाण्डों के टुकडों पर तिकुना, चौकोर तथा क्रॉस मार्क्स है।

तृतीय वीथीका:– इस वीथीका में उत्खननों से प्राप्त तांबा से निर्मित उपकरणों जैसे कुल्हाड़ियां, ब्लेड, चाकू, अग्रबाण, भाले (जिनका प्रयोग लकड़ी काटने तथा आत्मरक्षा के लिए) छेनी, मनके, दर्पण, चूड़ियाँ, अंगूठियाँ तथा सुईयों को प्रदर्शित किया गया हैं। दुसरे मुख्य पुरावशेषों में चर्ट ब्लेड, अगेट पत्थर के नाप–तोल तथा पक्की मिट्टी से निर्मित तराजूओं, समय मापक ग्लास (डमरू आकार का) तथा स्केल इत्यादि को प्रदर्शित किया गया है।

इन पुरावशेषों के अतिरिक्त प्राप्त शवाधान की प्रतिकृति **शवाधान अन्त्येष्टि संस्कार प्रक्रिया** को संग्रहालय परिसर के प्रांगण में प्रदर्शित किया गया है।

कालीबंगा पुरास्थल का संक्षिप्त सारांश:–

यह पुरास्थल पूर्व में घग्घर नदी (प्राचीन सरस्वती नदी) के बाएँ तट पर स्थित था, जो अब सूख चुकी है, जिसकों सन् 1952 में श्री अमलानन्द घोष ने अपने अन्वेषण कार्यक्रम के अर्न्तगत उजागर किया था। नौ वर्षो के पश्चात् यह पुरास्थल प्रोफेसर बी. बी. लाल, श्री बी. के. थापर तथा श्री जे. पी. जोशी द्वारा नौ सत्रों सन् 1961 से 1969 तक उत्खनित किया गया है। ये उत्खनन हड़प्पाकालीन नगर कालीबंगा के प्राचीन इतिहास तथा पुरातात्त्विक पुरावशेषों को जानने के उद्देश्य से किये गये थें। इस पुरास्थल के उत्खननों से **प्रारम्भिक हड़प्पाकालीन संस्कृति (3000–2700 ई.पू.) तथा विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति (2600–1900 ई.पू.)** के पुरावशेष प्राप्त हुये हैं । यह पुरास्थल तीन टीलों में विभाजित है, जिसमें से सबसे बड़ा टीला मध्य में **(के०एल०बी०–2, विकसित हड़प्पनकालीन)**, मध्य छोटा टीला पश्चिम में **(के०एल०बी०–1, प्रारम्भिक हड़प्पनकालीन)** तथा सबसे छोटा टीला पूर्व में **(के०एल०बी०–3, विकसित हड़प्पनकालीन)** स्थित हैं, इन टीलों के अतिरिक्त एक अन्य टीला **(के०एल०बी०–8, शवाधान अन्त्येष्टि संस्कार प्रक्रिया)** दुर्ग के पश्चिम–दक्षिण में भी स्थित हैं। इस टीलें से उत्खनन में तीन प्रकार की शवाधान पद्धतियाँ प्रकाश में आयी हैं। प्रथम **आयताकार गर्तों वाली शवाधान पद्धतियाँ**, दूसरी **वृत्ताकार गर्तों वाली घट शवाधान पद्धतियाँ** तथा **तृतीय आयताकार गर्तों वाली घट शवाधान पद्धतियाँ** जिसमें अन्त्येष्टि संस्कार प्रक्रिया में प्रयोग होने वाले पुरावशेष प्राप्त हुये हैं। अन्तिम दो **शवाधान पद्धतियाँ** बिना मानव कंकाल के प्राप्त हुई हैं।

प्रारम्भिक हड़प्पाकालीन संस्कृति की बस्ती एक समचतुर्भुजाकार परकोटे से घिरी थी जिसका माप उत्तर से दक्षिण में 250 मीटर तथा पूर्व से पश्चिम में 180 मीटर तक था। इस परकोटा में आवास–गृह का निर्माण 30x20x10 से.मी. की कच्ची ईंट्टों से किया गया था। इस पुरास्थल के उत्खनन में सर्वोत्तम उपलब्धि दक्षिण–पूर्व भाग से प्राप्त हल से जुते हुए खेत के अवशेष हैं, जो कि सम्भवतः विश्व में इस प्रकार का यह प्राचीनतम उदाहरण है। इस पुरास्थल की विशिष्ट पहचान इसकी प्रारम्भिक हड़प्पाकालीन संस्कृति कि मृदभाण्ड कला है जो चाक पर तथा 400–600° डिग्री के तापमान पर पक्का कर बनाई जाती थी। इन मृदभाण्डों को उनकी संरचना के आधार पर छः श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं।

विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति से शवाधान अन्त्येष्टि संस्कार प्रक्रिया का पता चलाता है। इस काल की मृदभाण्ड 930° उच्च तापमान पर पक्का कर बनाई जाती थी। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि कालीबंगा प्रथम की बस्ती का भूकम्प जैसी किसी प्राकृतिक आपदा के कारण 2700 ई.पू. के लगभग अन्त हो गया होगा। लगभग 100 वर्ष पश्चात् जब विकसित हड़प्पकालीन सभ्यता (सिन्धु सभ्यता) के लोग पुनः यहाँ आकर बसे। यह नगर योजना 700 वर्षो तक एक सुनियोजित आकार में रही जिसके अन्दर किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं हुआ। विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति के लोगों ने नगर योजना में बदलाव किया। पश्चिम में **'दुर्ग'** (Citadel) तथा पूर्व में **निचला नगर'** (Lower Town) के रूप में। **दुर्ग** जो समचतुर्भुज 240 मीटर उत्तर– दक्षिणा तथा 120 मीटर पूर्व–पश्चिम में परकोटे से सुरक्षित था। दुर्ग के दक्षिणी अर्धभाग में पाँच–छः कच्ची ईंटों से निर्मित बड़े चबूतरे भी प्राप्त हुये थे जो की सम्भवतः धार्मिक अनुष्ठान हेतु प्रयोग होते होगें। एक चबूतरे पर कुआं तथा 'अग्नि–वेदिका' (आयताकार गर्त) पक्की ईंट्टों से निर्मित प्राप्त हुये थे। एक अन्य दुसरे चबूतरे पर एक पंक्ति में सात आयताकार 'अग्नि–वेदिका' भी बनी हुई प्राप्त हुई थी। **निचला नगर'** (Lower Town) ईंटों से निर्मित परकोटे के अन्दर नगर क्षेत्र के अनुरूप विशिष्ट प्रकार से नियोजित था जिसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम 240 मीटर तथा उत्तर से दक्षिण 360 मीटर थी। परकोटे के अन्दर गलियाँ उत्तर–दक्षिण एवं पूर्व–पश्चिम दिशा में जाल प्रतिरूप (Gridiron) के रूप में अवस्थित थी।

अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

शोध अध्ययन की आवश्यकता

कालीबंगा हड़प्पा सभ्यता की एक विस्तृत विवेचना पर गहराई से शोध नहीं हुआ है। इस सभ्यता पर शोध करने से प्राचीन मानव जाति के सांस्कृतिक, भौतिक, सामाजिक, आर्थिक कारणों पर प्रभाव डाला जा सकेगा। आधुनिक सभ्यता के परिपेक्ष्य में दोनों का तुलनात्मक अध्ययन कर मानव जाति के विकास में नवीन रचनात्मक आयाम विकसित किए जा सकेंगे।

1. कालीबंगा – हड़प्पा सभ्यता की विस्तृत विवेचना पर अभी तक शोध नहीं हुआ है।

2. कालीबंगा – हड़प्पा स्थल पर शोध करने से महिलाओं के अधिकारों की जानकारी निकलकर सामने आएगी। यह शोध पूर्ण रूप से उक्त कथन को सिद्व करता है कि यह सभ्यता मातृ सत्तात्मक थी।

3. इस स्थल पर शोध करने से हड़प्पा सभ्यता के लोगों का बाहरी सभ्यताए जैसे – मिश्र, मेसोपाटिया के साथ व्यापारिक, राजनैतिक सम्बंधो की बातें सामने आंएगी जिसका निष्कर्ष कालीबंगा के बाहरी लोगों के साथ प्रगाढ़ सम्बंधों को दर्शाता है।

मानविकी एवं समाजशास्त्र की परिभाषा

मानविकी एवं समाजशास्त्र एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के अन्दर मौजूद जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है और मानविकी एवं समाजशास्त्रीय वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने की योग्यता विकसित करती है।

प्रो. इबान्स प्रिंटचार्ड के अनुसार, ''समाजशास्त्र मानवशास्त्र समाजशास्त्रीय अध्ययनों की एक शाखा माना जा सकता है। वह शाखा जो कि मुख्यतः अपने को आदिम समाजों के अध्ययन में लगाती है।''

श्रीनिवास के अनुसार ''यह मानव समाजों की तुलनात्मक अध्ययन है। आदर्श रूप में यह सभी समाजों, सभ्य और ऐतिहासिक को सम्मिलित कर लेता है।''

शोध समस्या

कालीबंगा – हड़प्पा सभ्यता की एक विवेचना।

तकनीकी शब्दावली

मानविकी का अर्थः–

मानविकी वह शैक्षणिक विषय है जिनमें प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञानों के मुख्यतः अनुभवजन्य बदलाव के विपरीत इसमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक विधियों का इस्तेमाल कर मानविकी का अध्ययन किया जाता है।

मानविकी अध्ययन का उद्देश्यः–

इसके अध्ययन से मानव का मानसिक विकास होता है और वह आगे चलकर मानवीय मुद्दों को पूरे जोरदार तरीके से उठायेगा।

सेलखड़ी पत्थरः–

यह एक नरम पाषाण है जिस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के लोग आहत से चिह्न उत्कीर्ण करते थे।

C-14 : -

यह एक रेडियो कार्बन पद्वति है जिसका अर्धआयुकाल 5730 साल का है। इस विधि द्वारा रेडियो एक्टिव पदार्थों की आयुसीमा निर्धारण करने में प्रयोग किया जाता है।

अग्निकुण्ड (Fire Altar)

यह एक प्रकार की यज्ञवेदिकाएँ थी, जिनका प्रयोग हवनकुण्ड, पूजा स्थलों के रूप में किया जाता था।

बासिकाजुंसी :– एक प्रकार की फसल की किस्म।

गवरबन्द :– का तात्पर्य बाँध से है।

शोध विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुसंधान में कई अध्ययन विधियाँ प्रचलित है। इस शोध समस्या के लिए शोधकर्मी द्धारा सर्वेक्षण विधि का चयन गया किया है।

सर्वेक्षण विधि :–

सर्वेक्षण विधि में उन लोगों से प्रशन पूछकर आँकडे इकट्ठे किये जाते है जिनके बारे में माना जाता है कि उनके पास जानकारी है।

शोध के चर

शोधकर्मी अपनी समस्या से सम्बन्धित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना अंकित मूल्य रखने वाले गुणों की विशेषता या योग्यता का चयन करता है।

''चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य है'' – कर लिंगर।

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है।

1.प्राथमिक चर :–

प्राथमिक चर वे मूल आँकडे होते है जिसमें अनुसंधान कर्त्ता या उसके द्वारा नियुक्त प्रगणक, स्वयं एकत्र शामिल होते है।

2.द्वितीय चर :–

द्वितीयक आँकडे, प्रकाशित या अप्रकाशित स्त्रोत से प्राप्त होते है।

शोध के उद्देश्य

मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्देश्य का निर्धारण करता है। उद्देश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते है तथा परिश्रम, धन व्यय हो जाता है। अतः सार्थक प्रयास व बाछित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्देश्य का निर्धारण किया जाता है।

1. कालीबंगा – हड़्प्पा स्थल की विवेचना करना।
2. कालीबंगा सभ्यता स्थल के सामाजिक परिदृश्य को जानना।
3. कालीबंगा स्थल के समकालीन सभ्यताओं के साथ सम्बंधों को दर्शाना।
4. कालीबंगा सभ्यता में नारी समाज की भूमिका का अकंन करना।
5. इस सभ्यता के उत्थान व पतन के कारणों पर विवेचन करना।
6. कालीबंगा सभ्यताओं में पाए गए अवशेष मृदभाण्ड, सेलखड़ी पत्थर, आभूषण व कंकालों आदि पर हुए अन्वेषण के परिणामों पर प्रकाश डालना।

शोध की परिकल्पना

कालीबंगा एक प्राक्–हड्प्पा कालीन सभ्यता थी। जिसकी खोज अमलानन्द घोष ने 1953 ई. में की। यह सभ्यता मातृ सत्तात्मक थी। इस सभ्यता के बहुत से रचनात्मक कार्य हड्प्पा व मोहनजोदडो से मेल खाते है इसलिए दशरथ शर्मा ने इसे ही हड्प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा है।

इस सभ्यता पर शोध करने से सामाजिक, राजनैतिक सांस्कृतिक विचारधाराएँ सामने आई है। जिसको वर्तमान पीढ़ी ने इन विचारधाराओं को आवश्यक संशोधनों सहित ग्रहित किया है।

इस शोध के माध्यम से कालीबंगा सभ्यता स्थल का भौतिक परिदृश्य समाज के सामने ओर अधिक स्पष्ट हो पायेगा।

अध्ययन में अपनायी जाने वाली विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया जायेगा। जिसके माध्यम से शोधार्थी अपने आँकडों एवं तथ्यों को विभिन्न पुस्तकालयों की पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर अपने शोध में कालीबंगा – हड़्प्पा स्थल की विवेचना का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

सर्वेक्षण विधि के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित कर सकेंगें।

शोध का परिसीमन
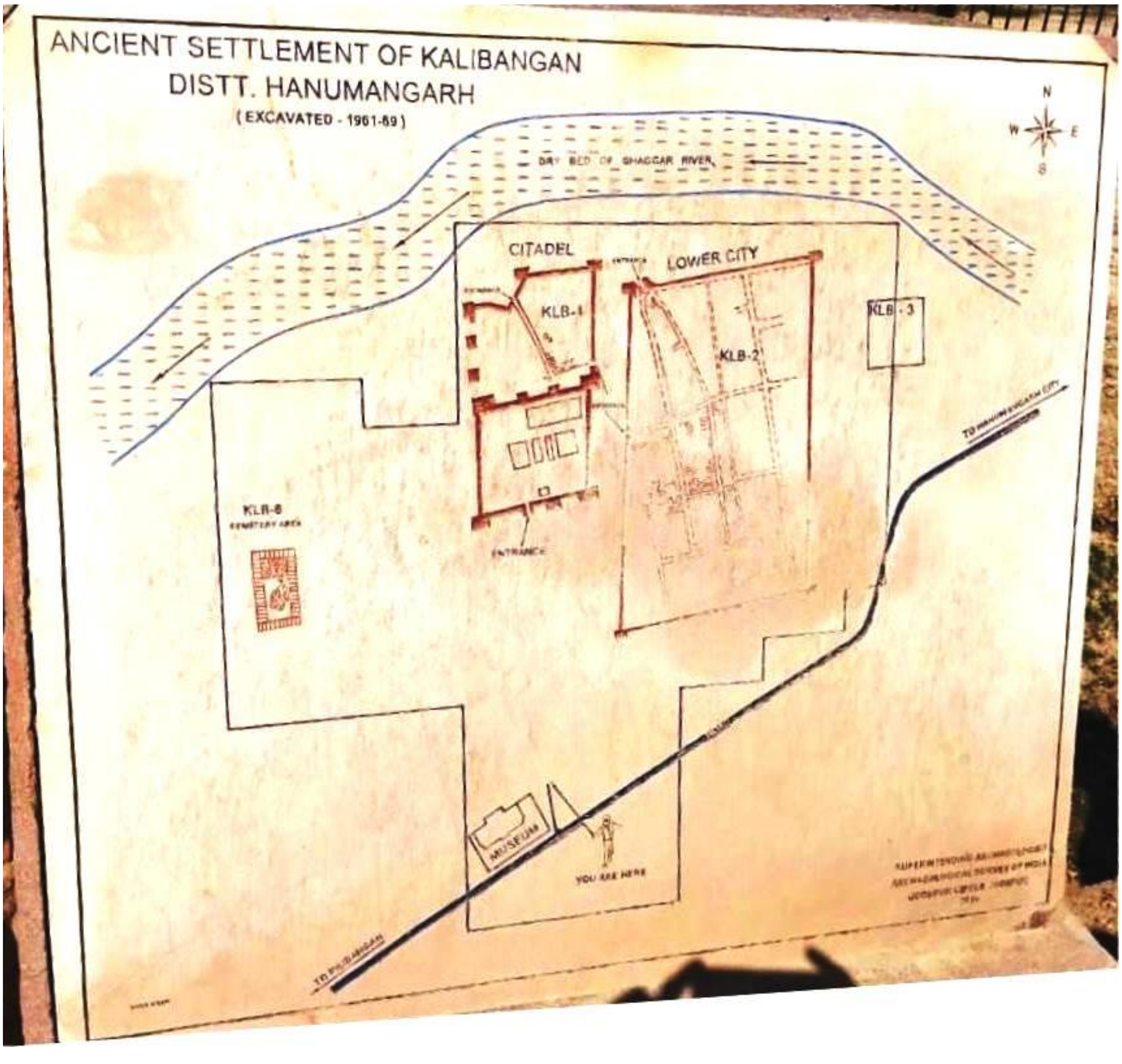
1. प्रस्तुत शोध में कालीबंगा – हड़प्पा स्थल की विवेचना पर अध्ययन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।
3. कालीबंगा सभ्यता स्थल का विवेचनात्मक अध्ययन किया जायेगा।